4 रजि. नं. पी.बी./जे.एल–011/2018-20

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख पत्र

वर्षः 75, अंक : 8 एक प्रति 2 : रुपये
रविवार 6 मई, 2018
विक्रमी सम्वत् 2075, सृष्टि सम्वत् 1960853119
दयानन्दाब्द : 194 वार्षिक शुल्क : 100 रुपये
आजीवन शुल्क : 1000 रुपये
दूरभाष : 0181-2292926, 5062726
E-mail: apspunjab2010@gmail.com,
www.aryapratinidhisabha.org

वर्ष–75, अंक : 8, 3-6 मई 2018 तदनुसार 23 वैसाख सम्वत् 2075 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

POSTAGE PRE-PAID
MAIL BUSINESS CENTRE
03 MAY 2018
JALANDHAR CITY R.M.S.

भगवन् ! मुझे आस्तिक बना

लेo–स्वामी वेदानन्द (दयानन्द) तीर्थ

इन्द्र मृळ मह्यं जीवातुमिच्छ चोदय धियमयसो न धाराम्।
यत्किं चाहं त्वायुरिदं वदामि तज्जुषस्व कृधि मा देववन्तम्।।
–ऋ. ६।४७।१०

शब्दार्थ–हे **इन्द्र** = परमेश्वर! **मृळ** = कृपा कर **मह्यम्** = मेरे लिए **जीवातुम्** = जीना। **इच्छ** = चाह! मेरी **धियम्** = बुद्धि को **अयसः + धाराम्+न** = लोहे की धार की भाँति **चोदय** = प्रेरणा कर। **त्वायुः** = तेरा अभिलाषी **अहम्** = मैं **इदम्** = यह **यत्+किं+च** = जो कुछ **वदामि** = कहता हूँ **तत्** = उसे **जुषस्व** = प्रेमपूर्वक स्वीकार कर और **मा** = मुझको **देववन्तम्** = भगवान् वाला, आस्तिक **कृधि** = बना।

व्याख्या–हे विश्वेश्वर! अखिलेश्वर! परमेश्वर! सदेश्वर! परत्पर! परमेश्वर! आप परम दयालु हो, करुणामृतवारिधि हो। यह विशाल संसार आपकी दया तथा कृपा का प्रत्यक्ष प्रमाण है। जीवनदाता:! जगद्विधात:! कर्मफल-प्रदात:! धात:! आप महादानी हो, आपके दान की महिमा कौन वर्णन कर सकता है! सचमुच **'भद्रा इन्द्रस्य रातयः'** आप महान् भगवान् के दान उत्तम हैं, हितकारी हैं। प्रियतम! स्नेहमय प्रभो! आपकी तो मार में भी प्यार निहित रहता है।

ज्ञान के भण्डार! आपने अपनी स्वाभाविक दया से सर्गारम्भ में मनुष्य को मार्ग दिखाने के लिए, बुद्धि को सहयोग देने के लिए, आँख के लिए सूर्यसम्मान, वेदज्ञान दिया। जिससे जीवों का कल्याण हुआ, होता है और होता रहेगा। कृपासागर! मुझ पर कृपा कीजिए, करुणामृत की वृष्टि कीजिए। संसार के विषयविष से तड़प रहे। प्राणियों पर अपनी विषापहारी भारी कृपावृष्टि कीजिए ताकि तेरी कृपामयी छत्रछाया में रहता हुआ। मैं जीऊँ। प्रभो! वह जीवन-जीवन नहीं है, जिसमें तेरी सुमति न हो। कृपालो! **'प्र नो नय प्रतरं वस्यो अच्छ'** [ऋ० ६।४७।७] = तू हमें भली-भाँति दीर्घ जीवन प्राप्त करा। पूजनीय! मेरी जीने की इच्छा है। मृत्यु को मुझसे परे भगा। जीता हुआ ही तो तेरी पूजा कर सकूँगा। तेरी आराधना के बिना मेरे लिए कुछ भी सिद्ध नहीं हो सकता। महात्माजन तुझे दुष्पार कहते हैं, किन्तु प्रभो, मेरी बिनती है कि–**'भवा सुपारो अतिपारयो नः'** [ऋ० ६।४७।७] = तू सुपार बन जा और हमें पार लगा दे। भवसागर के भयङ्कर प्रवाह में पड़कर प्रभो! हमें कुछ भी नहीं सूझ रहा। बुद्धि कुण्ठित हो रही है, कार्य-अकार्य का विवेक नष्ट-सा होता जा रहा है, अतः विवेकप्रदात:! **'चोदय धियम् अयसो न धाराम्'** = मेरी बुद्धि को शस्त्र की भाँति तीक्ष्ण कर दे। प्रभो! यह सूक्ष्म विषय के तल तक पहुँचने वाली हो और सदा मेरी तुझसे प्रीति बढ़ाने वाली हो।

प्रभो! सब संसार देख लिया, इसमें सार नहीं है। तू सार है, सारवान् है। मुझे सार को अपनाने की, धारने की बुद्धि दे–**'यत्किंच त्वायुरिदं वदामि तज्जुषस्व कृधि मा देववन्तम्'** भगवान्! यह जो मैं तुझसे निवेदन कर रहा हूँ, इसे कृपया प्रीतिपूर्वक स्वीकार कीजिए और मुझे आस्तिक बना दीजिए और–**आरे अस्मदमतिम्** = प्रभो! मुझसे नास्तिकता को दूर कर। परमेश्वर कृपा करके–**'प्र णः पुरएतेव पश्य'** [ऋ० ६।४७।७]–तू हम पर ऐसी कृपादृष्टि कर, जैसे नेता अपने अनुयायिओं पर करता है। मुझे कोई युक्ति नहीं आती, कोई नीति नहीं आती। तू ही मेरे लिए **'भवा सुनीतिरुत वामनीतिः'** [ऋ० ६।४७।७]–उत्तम और सुन्दर कमनीय नीति है। जिधर तू चलाये, उधर ही जाऊँ। **'तस्य वयं सुमतौ यज्ञियस्यापि भद्रे सौमनसे स्याम'** [ऋ० ६।४७।१३] = तुझ पूज्य की सुमति तथा कल्याण-सौहार्द में हम रहें। कृपा कर प्रभो! **'इन्द्र मृळ'। धियो यो नः प्रचोदयात्।**

(स्वाध्याय संदोह से साभार)

आगामी आर्य महासम्मेलन बरनाला में

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (रजि.), गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा जालन्धर के तत्वावधान में आगामी आर्य महासम्मेलन **11 नवम्बर 2018** को बरनाला में आयोजित किया जा रहा है। इसलिये पंजाब की समस्त आर्य समाजों से निवेदन है कि वह इन तिथियों में अपनी अपनी आर्य समाज का कोई कार्यक्रम न रखें और इस आर्य महासम्मेलन को सफल बनाने के लिये पूरी शक्ति से जुट जाएं। आपके सहयोग से इससे पूर्व 17 फरवरी 2017 को लुधियाना और 5 नवम्बर 2017 को नवांशहर में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब सफल आर्य महासम्मेलन कर चुकी है। आशा है इस आर्य महासम्मेलन में भी आप का पूरा पूरा सहयोग मिलेगा।

प्रेम भारद्वाज
सभा महामंत्री

ऋषिर्हि पूर्वजा अस्येक ईशान ओजसा।
इन्द्र चोष्कूयसे वसु।।
–ऋ० ८.६.४१

भावार्थ–हे सब ऐश्वर्य के स्वामी इन्द्र! इस संसार में आपसे पूर्व विद्यमान आप ऋषि हैं। सबका द्रष्टा होने से आपको वेद ने ऋषि कहा है। संसार-भर का सारा धन आपके अधीन है। जिस पर आप प्रसन्न होते हैं, उसको अनेक प्रकार का धन आप ही देते हैं और आप अकेले ही अपने अनन्त बल से सब पर शासन कर रहे हैं।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने ईश्वरीय व्यवस्था और मानवीय अवस्था का बोध कराया

ले०-उम्मेद सिंह विशारद वैदिक प्रचारक गढ़निवास मोहकमपुर देहरादून

भारत वासियों के अहोभाग्य से महाभारत काल के बाद अट्ठारवी शताब्दि में भारत की पुण्य भूमि टकांरा (गुजरात) में युग पुरूष महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का जन्म एक सम्भ्रान्त ब्राह्मण परिवार में हुआ था। उन्होंने ईश्वरीय वाणी वेदानुसार और ईश्वरीय व्यवस्था सृष्टि क्रमानुसार वैज्ञानिक आधार पर ईश्वर का सत्य स्वरूप और मानवीय कर्म व्यवस्था का सत्य मार्ग संसार के सामने रखा। स्वरचित ग्रन्थों द्वारा जिनमें प्रमुख सत्यार्थ प्रकाश में ईश्वरीय व्यवस्था और मानवीय कर्म व्यवस्था का उपदेश दिया। उन्होंने सर्वप्रथम त्रैतवाद का बोध कराया, उन्होंने शुद्ध कर्म, शुद्ध ज्ञान, शुद्ध उपासना का संसार को ज्ञान कराया। उन्होंने ज्ञान दिया, जीव ब्रह्म और प्रकृति तीनों अनादि और निरन्तर रहने वाली सत्ताऐं हैं। उन्होंने सर्वप्रथम स्वाधीनता व समानता व पंथ निरपेक्ष का मार्ग बताया। उन्होंने कोई पंथो की बात नहीं की उन्होंने वेद और योग का पथ बताया। उन्होंने कोई भी मत व सम्प्रदाय खड़ा नहीं किया, अपितु प्राचीन आर्यवर्त की संस्कृति व संस्कारों को बढ़ाया।

ईश्वरीय व्यवस्था और मानवों द्वारा मान्य भगवानों की अवस्था पर विचार

1. जो सृष्टि रचना ईश्वर करता है। उसे मनुष्यों द्वारा मान्य भगवान नहीं कर सकते हैं। बल्कि ईश्वरीय सृष्टि रचना में जीवन बिताते थे।

2. ईश्वर सारे ब्रह्माण्ड का रचयिता है और मनुष्य द्वारा मान्य भगवान ईश्वर के नियम व व्यवस्था में रहता है।

3. ईश्वर सारे जीवों का पालन पोषण करता है और जीवों के लिये जीवन यापन के तमाम पदार्थों का निर्माण करता है। मनुष्य मान्य रूपी भगवान ईश्वर के नियम में रहता है और ईश्वर द्वारा रचित पदार्थों का सेवन करके जीवित रहता है और ईश्वर की रचना के अन्तर्गत रहता है।

4. ईश्वर फल दाता है और जीवों के कर्मों का यथा योग्य क्रमानुसार न्याय पूर्वक फल देता है और मनुष्यों द्वारा मान्य भगवान ईश्वर द्वारा कर्म फल व्यवस्था के अन्दर जीवित रहता है।

5. ईश्वर सारे जीवों को भोग सामग्री प्रदान करता है और मनुष्य द्वारा मान्य भगवान ईश्वर द्वारा प्रदत भोग सामग्री के कारण ही जीवित रहता है।

6. ईश्वर सृष्टि की उत्पत्ति, स्थिति और प्रलय करता है और वह नियम निरन्तर चलता रहता है और मनुष्यों द्वारा मान्य भगवान ईश्वर की उत्पत्ति, स्थिति और प्रलय की व्यवस्था में रहता है।

7. ईश्वर अजन्मा और अविनाशी है। मानवों द्वारा भगवान जन्मा व एक देशी और नाशवान है, अर्थात् जन्म और मृत्यु के बन्धन में रहता है।

8. ईश्वर सृष्टि क्रम द्वारा जीवों के लिये ऋतुएं, तथा अन्न व वनस्पतियों की रचना करता है और मनुष्यों द्वारा मान्य भगवान, ईश्वर द्वारा रचित ऋतुओं का वनस्पतियों व अन्न द्वारा जीवन जीता है।

9. ईश्वर निराकार है व सर्वशक्तिमान है व सर्वव्यापक है और मनुष्यों द्वारा मान्य भगवान साकार जन्म मृत्यु के बन्धन में रहता है और अल्प सामर्थ्य वाला है, और एक देशीय होता है और भिन्न-भिन्न आकार वाला होता है इसलिये निराकार ईश्वर ही सत्य है, हमें उसी को मानना चाहिए।

ईश्वरीय व्यवस्था और मानवों और मानवीय कर्म व्यवस्था पर संक्षिप्त विचार

ईश्वरीय व्यवस्था में जीव सभी प्रकार के कर्मों का अर्थात् सभी प्रकार के जीवों के प्रति किये गये कर्मों का यथा योग्य सुख-दुख रूपी फल प्राप्त होता हैं। इस व्यवस्था में अपराध के दृष्टिकोण से किसी भी जीव के प्रति अपराध पर चाहे। वह पशु पक्षी, मानव, अजन्मा शिशु आदि कोई भी क्यों न हो कोई भेद नहीं किया जाता।

मानवीय कर्म व्यवस्था

मानवीय कर्म फल व्यवस्था में मानव के उन्हीं अशुभ कर्मों को दण्ड योग्य माना जाता है जो दूसरे मानव के प्रति किये जाते हैं। किन्तु कार्य ऐसे है जो अपराध की श्रेणी में नहीं आते जैसे पशु पक्षियों पर किये गये अत्याचार। राष्ट्रीय पक्षियों को छोड़कर ऐसे ही भ्रूण हत्या को कानूनी मान्यता प्राप्त होते हुए भी बच्चों की हत्या को भी हत्या का अपराध नहीं माना जाता।

ईश्वरीय द्वारा रचित जाति व्यवस्था और मनुष्यों द्वारा मान्य जाति व्यवस्था

ईश्वर द्वारा रचित जीव जैसे पशु, पक्षी, गौ, अश्व, हाथी, सांप, बिच्छु, कौवा, कोयल, मेंढक, शेर, चीता, भैंस, बकरी, व अनन्त प्राणीयों की रचना की गयी है, और जो शरीर जिस जीव को दे दिया गया है। वह आजीवन इसी रूप क्रमानुसार संसार में जीवों को वैसे ही शरीरों की रचना करता है, जो कभी बदलते नहीं है। वैसे ही प्राणियों में श्रेष्ठ मनुष्यों की भी भिन्न-भिन्न शक्लों द्वारा रचना की है और गुण कर्मानुसार मनुष्यों को ब्रह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, व शूद्र का वर्ण प्रदान किया है, किन्तु उसमें कोई भी भेद-भाव नहीं है और यह उत्पति का कर्म, सृष्टि उत्पत्ति का कर्म सृष्टि उत्पात और प्रलय के उपरान्त भी निरन्तर चलता रहता है।

मनुष्यों ने अपने अज्ञान व स्वार्थ सिद्धि के कारण मनुष्यों को आपस में बांट दिया है, और स्वरचित जाति व्यवस्था बनाकर आपस में एक संघर्ष की दीवार खड़ी कर रखी है। जो ईश्वरीय व्यवस्था में महापाप है और मनुष्य जाति के दुखों का कारण है। जब तक मनुष्य वर्ण व्यवस्थानुसार नहीं चलता और वर्तमान तथा कथित जाति व्यवस्था में घुलता रहेगा, तब तक कभी भी मानवीय जगत में पूर्ण सुख शान्ति मिल ही नहीं सकती है। यदि ईश्वर का आशीर्वाद प्राप्त करना चाहते हो तो अपने नाम के जाति वाचक शब्द निकाल दीजिये। इस कार्य से हम ईश्वर के अति नजदीक हो जायेंगे।

ईश्वरीय व्यवस्था में कभी भी जीवात्मा की मृत्यु नहीं होती है।

ईश्वरीय कर्म फल व्यवस्था में जीव की कमी मृत्यु नहीं होता है। केवल शरीर का वियोग और रूपान्तर होता है और जीव को अपने कर्मों का शुभा-शुभ परिणाम रूपी सुख या दुख भोगना पड़ता है और जीव व ईश्वर के नित्य होने से ईश्वर की कर्म व्यवस्था भी नित्य है। बिना कर्मों का फल भोगे कर्म नष्ट नहीं होते है, संसार में मनुष्य का सहयोग होता है और नहीं संयोग होता है। वहां वियोग अवश्य होता है किन्तु ईश्वर के साथ कभी भी वियोग नहीं होता। सदा संयोग ही संयोग रहता है।

मानवीय कर्मफल व्यवस्था में कर्मफल की अवधारणा व्यक्ति के जीवन रहते ही सम्भव है। व्यक्ति की मृत्यु होते ही उसके शुभारम्भ कर्म मानवीय दण्ड व्यवस्था में समाप्त हो जाते है और वह कर्म ईश्वरीय कर्मफल व्यवस्था में आ जाते है। अत: कर्मफल दण्ड व्यवस्था व्यक्ति के जीवित रहते ही सम्भव है। ईश्वरीय व्यवस्था में जीव को कर्मफल अगले जन्म में शुभाशुभ का फल भोगना पड़ता है।

ईश्वरीय कर्मफल व्यवस्था में साक्ष्यों का कोई स्थान नहीं है

ईश्वर सर्वव्यापक तथा सर्वज्ञ होने के कारण सभी जीवों के कर्मों को यथावत जानता हैं। उसके कर्मफल व्यवस्था में साक्ष्यों को कोई स्थान नहीं है। वह प्रत्येक जीवों का कर्मफल न्यायनुसार करता है।

ईश्वरीय कर्मफल व्यवस्था में सदैव न्याय होता है।

ईश्वरीय कर्मफल व्यवस्था में ईश्वर सर्वव्यापक और सर्वज्ञ होने के कारण सबके कर्मों को यथावत जानता है। उनके जीव के लिये हुए कर्मों का यथावत न्याय करता है।

मानवीय कर्म दण्ड व्यवस्था में सीमित ज्ञान के कारण व मानवीय दण्ड व्यवस्था में साक्ष्यों के अभाव के कारण माफी की अब धारणा बनी रहती है। वर्तमान शासन व्यवस्था में राष्ट्राध्यक्ष के पास भी विशिष्ट परिस्थितियों में विशिष्ट कारणों के आधार पर अपराधी को उसके दण्ड को माफ करने का अधिकार रहता है।

ईश्वरीय कर्मफल या दण्ड व्यवस्था में साक्षी की आवश्यकता नहीं होती है।

ईश्वरीय कर्मफल व्यवस्था में ईश्वर सर्वव्यापक और सर्वज्ञ होने के कारण सबके कर्मों को यथावत जानता है अत: जीव के लिये हुए कर्मों का यथावत न्याय करता है।

मानवीय कर्म व्यवस्था में न्यायालय के समक्ष प्रस्तुत व्यक्ति के अपराध का निर्धारण किया जाता है। यदि उसने वह अपराध किया है और साक्ष्यों के आधार पर प्रमाणित नहीं होता है तो उसे छोड़ दिया जाता है। जबकि ईश्वरीय व्यवस्था में ऐसा नहीं है।

सम्पादकीय

पंजाब की सभी आर्य समाजों का हार्दिक धन्यवाद

पंजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ़ के प्रशासन ने यू.जी.सी. द्वारा 1975 में स्थापित महर्षि दयानन्द चेयर का विलय संस्कृत विभाग में करने का निर्णय कुछ समय पहले लिया था। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के संज्ञान में यह मामला आने पर सभा ने इस निर्णय का पुरजोर विरोध करने का निर्णय लिया। इस विषय में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने सभा कार्यालय गुरूदत्त भवन किशनपुरा चौक जालन्धर में 24 मार्च 2018 को पूरे पंजाब के अन्तरंग सदस्यों की मीटिंग बुलाई। इस मीटिंग में सभी प्रतिनिधियों ने विश्वविद्यालय प्रशासन के इस निर्णय का भरपूर विरोध किया। सबने एक स्वर में कहा कि महर्षि दयानन्द के साथ इस प्रकार का अन्याय बर्दाशत नहीं किया जाएगा। जिस दयानन्द ने देश की आजादी से लेकर सामाजिक कुरीतियों को दूर करने तथा नारी शिक्षा को पुनर्जीवित करने का कार्य किया है, उनके नाम पर स्थापित चेयर को किस प्रकार समाप्त या विलय किया जा सकता है। इसलिए विश्वविद्यालय को अपना यह निर्णय बदलना होगा।

सभी सदस्यों ने आपसी विचार विमर्श के पश्चात यह निर्णय लिया कि 16 अप्रैल 2018 को पूर पंजाब में सभी आर्य समाजों द्वारा सामूहिक रूप से जिलाधीश महोदय को ज्ञापन सौंपकर अपना विरोध दर्ज कराया जाएगा। सभी आर्य समाजें अपने-अपने जिले में एकत्रित होकर इस निर्णय के विरूद्ध आवाज उठाएंगे। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब द्वारा लिए गए इस निर्णय का सभी सभासदों ने भरपूर समर्थन किया और कहा कि सभी एकजुट होकर इस निर्णय के विरूद्ध आवाज उठाएंगे।

मैं आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब से सम्बन्धित सभी आर्य समाजों को तहे दिल से धन्यवाद करता हूँ जिन्होंने 16 अप्रैल को भारी संख्या में एकत्रित होकर तथा जिलाधीश महोदय को अपना ज्ञापन सौंपकर विरोध दर्ज कराया। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के तत्वावधान में हुए इस विरोध प्रदर्शन में पूरे पंजाब के अलग-अलग जिलों में भारी संख्या में आर्य समाजों के अधिकारी एवं सदस्यण, आर्य शिक्षण संस्थाओं में अधिकारी एवं सदस्यगणों तथा अन्य आर्यजनों ने भाग लिया। जिलाधीश को ज्ञापन पत्र सौंपकर सभी आर्य समाजों ने अपनी संगठन शक्ति का परिचय दिया और अपनी आवाज को मानव संसाधन विकास मन्त्रालय भारत सरकार तक पहुंचाया। इस विषय में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की तरफ से पंजाब विश्वविद्यालय के कुलाधिपति उपराष्ट्रपति श्रीमान् वैकेंया नायडू जी को पत्र लिखकर विश्वविद्यालय के इस निर्णय से अवगत कराया था। उपराष्ट्रपति कार्यालय ने तुरन्त इस मामले को संज्ञान में लिया और विश्वविद्यालय प्रशासन को पत्र लिखकर सूचित किया। इसके साथ ही उपराष्ट्रपति कार्यालय की तरफ से आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के कार्यालय गुरूदत्त भवन किशनपुरा चौक जालन्धर को भी पत्र के माध्यम से सूचित किया गया कि आप पंजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ़ में जाकर कुलपति महोदय के समक्ष अपनी बात रखें। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महामन्त्री श्री प्रेम भारद्वाज जी ने दिल्ली में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की मीटिंग में इस मुद्दे को उठाया था और विस्तार से चर्चा की थी। सार्वदेशिक सभा की बैठक में भी यह निर्णय लिया गया था कि पंजाब विश्वविद्यालय के इस निर्णय के खिलाफ सभी आर्य प्रतिनिधि सभाएं अपने-अपने राज्यों में राज्यपालों अपना ज्ञापन सौंपकर विरोध दर्ज कराएंगी।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब उन सभी आर्य समाजों का हार्दिक धन्यवाद करती है जिन्होंने सभा के निर्देशों का पालन करते हुए ,अपने संगठन की शक्ति का प्रशासन को अहसास कराते हुए इस विरोध प्रदर्शन में बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया। आर्य प्रतिनिधि पंजाब हमेशा ही अपने सिद्धान्तों के प्रति सजग रहती है। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने राष्ट्र का सुधार करने के लिए विभिन्न क्षेत्रों में कार्य किया। गौ माता की रक्षा के लिए हस्ताक्षर अभियान चलाया, नारी जाति को उनका गौरव प्राप्त कराने के लिए शिक्षा का अधिकार दिलाया। जड़ पूजा करते- करते पाषाणबुद्धि हो चुके लोगों को मूर्तिपूजा के मकड़जाल से छुड़ाने का प्रयास किया। पाखण्ड और अन्धविश्वास में फंसकर अपना अस्तित्व भूले हुए लोगों को उनके अस्तित्व का स्मरण कराया। बाल विवाह, सती प्रथा, दहेज प्रथा की बुराईयों ने समाज को अन्दर ही अन्दर खोखला कर दिया था, इन बुराईयों को दूर करने के लिए महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने अपना समाज सुधारक का रोल निभाया। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने अपने ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के माध्यम से एक ऐसी राष्ट्रीय विचारधारा का प्रचार किया जिससे प्रेरणा लेकर अनेकों नवयुवकों ने अपने आपको देश की आजादी के सर्वात्मना समर्पित कर दिया। यह बात भी आजादी के इतिहास में अंकित है कि देश की आजादी में 85 प्रतिशत से ज्यादा योगदान आर्य समाज के साथ जुड़े एवं आर्य समाज की विचारधारा से प्रभावित लोगों का था। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का जीवन उनके कार्य आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणास्रोत बन सकते हैं। इसी उद्देश्य के साथ 1975 में पंजाब विश्वविद्यालय में यू. जी. सी. द्वारा दयानन्द चेयर की स्थापना की गई थी ताकि महर्षि दयानन्द, एवं आर्य समाज द्वारा किए जाने वाले कार्यों पर शोध हो, महर्षि दयानन्द की विचारधारा को युवा पीढ़ी जाने। इसी चेयर को विश्वविद्यालय प्रशासन अपना आर्थिक बोझ घटाने के लिए संस्कृत विभाग में विलय कर रहा था। इससे पहले भी विश्वविद्यालय कई प्रतिष्ठित चेयरों का संस्कृत विभाग में विलय कर चुका है। परन्तु इस बार विश्वविद्यालय प्रशासन को शायद आर्य समाज के संगठन एवं शक्ति का अहसास नहीं था।

मैं आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की तरफ से पंजाब की समस्त आर्य समाजों एवं शिक्षण संस्थाओं का हार्दिक धन्यवाद करना चाहता हूँ जिन्होंने विश्वविद्यालय प्रशासन को अपने संगठन की शक्ति का अहसास कराया है। संगठन में ही शक्ति है। आर्य समाज हमेशा से अपने हितों के प्रति जागरूक रहा है। जब-जब समाज में किसी बुराई ने जन्म लिया, आर्य समाज ने हमेशा ही एकजुट होकर उसे दूर करने के लिए कार्य किया है। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब अपने महापुरूषों के साथ किसी प्रकार का अन्याय बर्दाशत नहीं करेगी। किसी भी हालत में दयानन्द चेयर का विलय संस्कृत विभाग में नहीं होने देगी। अगर विश्वविद्यालय प्रशासन ने दोबारा फिर दुस्साहस करने का प्रयास किया तो आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब आन्दोलन करने से भी पीछे नहीं हटेगी।

प्रेम भारद्वाज
संपादक एवं सभा महामन्त्री

आर्य मर्यादा के ग्राहक महानुभावों की सेवा में

आर्य मर्यादा साप्ताहिक निरन्तर आपकी सेवा में पहुंच रही है। जिन आर्य मर्यादा के ग्राहकों ने अभी तक अपना वार्षिक शुल्क या पिछला शुल्क नहीं भेजा है उनसे विनम्र प्रार्थना है कि वह अपना वार्षिक शुल्क जल्द से जल्द भिजवाने की व्यवस्था करें। आर्य मर्यादा का वार्षिक शुल्क मात्र 100/- रुपये है और आजीवन सदस्यता शुल्क 1000/- रुपये है। इसलिये मेरी सभी ग्राहक महानुभावों से प्रार्थना है कि वह अपना शुल्क जल्द से जल्द भिजवाने की व्यवस्था करें। इसके साथ ही आर्य समाजों के पदाधिकारियों एवं सदस्यों से भी निवेदन है कि वह अधिक से अधिक आर्य मर्यादा के ग्राहक बनाने में सहयोग करें। आशा है आप का सहयोग हमें प्राप्त होगा।

-व्यवस्थापक आर्य मर्यादा

मुख्य उद्देश्य अग्निहोत्र का

ले०-हरिश्चन्द्र विद्यावचस्पति बसेड़ा, छोटी सादड़ी, प्रातपगढ़ राजस्थान

आदि स्मृतिकार मनु ने व्यवस्था दी-

ऋषि यज्ञं देव यज्ञं भूतयज्ञं च सर्वदा।
नृयज्ञं पितृ यज्ञञ्च यथाशक्तिर्न हापयेत्।।

व्यक्ति अपने सामर्थ्य के अनुसार पंच महायज्ञों को नित्य सम्पन्न करे। हर महायज्ञ के दो भाग, अग्निहोत्र देवयज्ञ का दूसरा भाग। अग्निहोत्र के हवन, यज्ञ, क्रतु आदि पर्याय हैं। इसकी सभी शास्त्रों ने, धर्मज्ञों ने प्रशंसा की। ऋग्वेद की उक्ति है-'यज्ञो भुवनस्य नाभिः' यज्ञ पृथ्वी का केन्द्र हैं।

'त्रयो धर्मस्कन्धा यज्ञ' (छान्दो उप) धर्म के तीन सम्बल हैं, प्रथम यज्ञ।

सहयज्ञाः प्रजाः सृष्ट्वा गी. 13 यज्ञ के साथ प्रजा की उत्पत्ति हुई।

प्राज्ञमूर्धन्य दयानन्द से प्रश्न किया-'यज्ञों में मन्त्रों का उच्चारण क्यों किया जाता है ?' (सत्यार्थ) ऋषि का उत्तर है-'प्रथम मंत्र उच्चारण से शास्त्र रक्षा, दूसरा उनमें आये आदर्श, निर्देश जीवन का अंग बनें।'

यास्क कहता है-'योऽर्थज्ञ इत् सकलं भद्रं अश्नुते।' जो अर्थ समझता है। वहीं कल्याण को प्राप्त करता है। यह सत्य है, हम जिस भाषा का ज्ञान नहीं रखते। उसके वाक्यांशों को स्मरण कर लें या सुन लें कोई लाभ नहीं। क्योंकि बिना अर्थ ज्ञान के हम प्रेरित नहीं होते।

ऐसे ही यदि हम अग्निहोत्र में उच्चारित मन्त्रों के अर्थ को समझें तो हमें पूर्ण लाभ होगा। अग्निहोत्र करने का मुख्य उद्देश्य जिस मन्त्र को बोलकर अग्निकुंड में अग्नि का आधान किया जाता है। उसमें ही वर्णित है। मन्त्र यह है-

'द्यौरिव भूम्नापृथिवीववरिम्णा तस्यास्ते पृथिवी देवयजनी पृष्ठे अग्निमन्नादमन्नाद्याय आदधे' यजु. 3-5।

मन्त्र के दो भाग-प्रथम में आत्मिक, दूसरे में भौतिक। हम यहां दूसरे भाग पर ही चर्चा करेंगे। केवल इसलिये कि लेख कलेवर नहीं बढ़े।

मन्त्र में अग्नि शब्द आता है। अग्नि के शास्त्रों में लगभग सौ संज्ञा हैं। सभी संज्ञाएं सार्थक हैं। यहां अग्नि अग्रणी अर्थ में प्रयुक्त सबसे आगे अतः अग्नि। प्रयुक्त अन्नाद् शब्द अग्नि का विशेषण अन्नाद= अन्न+अद् = अद् = भक्षणे अर्थात् अन्न खाने वाली। अन्न का अर्थ केवल इतना नहीं कि वह मात्र खाया जाये। यदि ऐसा ही अर्थ होगा तो अनर्थ हो जायेगा। विशेष मनुष्य के पक्ष में।

अन्न का वास्तविक अर्थ है, 'अनिति जीवयति इति अभ्रम्।' जिससे आत्मा, मन और शरीर को जीवन (ऊर्जा) मिले। वही अन्न शरीर पुष्ट हो, पर आत्मा ग्लानि से भर जाये। वह अन्न नहीं।

अग्नि यहां अभाद्र है क्योंकि वह जो लेती है। उससे ही जीवित रहती है तथा उस खाद्य को सहस्रों गुणा अग्नि में परिवर्तित करती है। यह वाष्प सिद्धान्त है। अद्=भक्षणे अर्थात् अद का अर्थ केवल भक्षण ही नहीं। उस खाद्य को ऊर्जा में परिवर्तित करना। अग्नि उससे जीवित रह। उस खाद्य को वाष्प सिद्धान्त के अनुसार सहस्रों गुणा ऊर्जा में परिवर्तित करती है। ऐसी अग्नि को 'पृष्ठे पृथिवी'=पृथिवी की पीठ पर स्थापित करना।

पुरोहित यज्ञ प्रारम्भ होने से पूर्व संकल्प वाक्य, यज्ञमान से बुलवाता है, समयानुसार महाद्वीप, देश, प्रदेश, क्षेत्र सभी बदलता है, पर इस वेद वाक्य को वसुन्धरा के हर चप्पे पर बोला जा सकता है। चाहे वह फाकलेन्ड हो या नीदरलेन्ड, सोमालिया हो या स्पेन, कुवैत हो या कोरिया। यही पर्याप्त प्रमाण कि वेद विश्व धरोहर हैं, एक देशीय नहीं। तो अग्नि पृथ्वी की पीठ पर, पृथ्वी की विशेषता यह देवयजनी, 'देवा यजन्ति याम् सा देवयजनी' जिस पर देवता यज्ञ करते हैं अथवा जिस पर यज्ञ करने वाला देव संज्ञा का अधिकारी हो जाता है। जो अग्निहोत्र करे तथा देवत्व के गुणों से युक्त नहीं उसका अग्निहोत्र निरर्थक।

क्यों रख रहा हूं ? अन्नाद्याय स्वामी जी इसका अर्थ करते हैं, अन्न आदि की प्राप्ति के लिये। जो अग्निहोत्र का मुख्य उद्देश्य है। कोई अध्यात्म, ऐश्वर्य नहीं, कोई अन्य सम्पदा या सन्तति भी नहीं, केवल अन्नादि सुलभ हो यही कामना ऐसा ही क्यों ? थोड़ा गहराई से विचार करे तो समाधान हो जायेगा।

मनुष्यादि के जीवन में अन्न की सर्वाधिक उपादेयता। उपनिषद् कहता है, 'अन्नं वै प्राणः' अन्न ही प्राण है। यजुर्वेद के प्रथम मन्त्र का प्रथम शब्द भी अन्न का ही उद्घोषक है-'इषेत्वोर्जे। गृहस्थाश्रम में प्रथम चरण रखते हुए वर वधू से भी यहीं कहता है। सप्तपदी के प्रथम पग में कि प्रथम अन्न के उत्पादन में तू मेरी अनुगामिनी होगी। गृहस्थ में हमारा पहला संकल्प अन्न संग्रह होगा।' 'इषे एकपदी भव।' सर्वजन हितैषी दयानन्द ने 'गोकरुणानिधि' किसी धार्मिक भावना के वशीभूत होकर नहीं लिखी। उनका उद्देश्य गोआदि उपकारी पशुओं के रक्षण से अन्न की समस्या का समाधान हो यथा एक बकरी की रक्षा से तथा एक गाय की रक्षा से मनुष्यों के एक समय के भोजन की समस्या का समाधान ढूंढते हैं। दयानन्द ने प्रसंगानुसार मनुष्य के सभी वर्गों की यथोचित प्रशंसा की है परन्तु प्रशंसा के सर्वोच्च वाक्य जो अन्न को पैदा करता है। उसको समर्पित किया। सत्यार्थ प्रकाश के छठे समुल्लास में लिखते हैं, 'किसान राजाओं का राजा और असली अन्नदाता है। आज के समय की मानसिकता में अन्न पैदा करने वाला सबसे घटिया। लड़कियों के लिये जब वर की तलाश में विज्ञापन निकलते हैं तो विदेश सेवा, डाक्टर, इंजीनियर, प्रोफेसर या दूसरे नम्बर पर व्यापारी की तलाश होती है। पर कोई ऐसा नहीं लिखता कि अन्न को पैदा करने वाला हो। अन्नदाता के प्रति कितनी विकृत मानसिकता? आज की शिक्षा का उद्देश्य समझदारी नहीं केवल नौकरी।

राष्ट्रकवि गुप्त जी ने भारत भारती में बहुत पूर्व इस मानसिकता पर उपालम्भ करते हुए लिखा-

श्रीमान् सुत को डांटते तो श्रीमती कह रही।
डांटो न लल्ला को मेरे नौकरी करनी नहीं।।
शिक्षा तुम्हारा नाश हो तुम नौकरी के हित बनी।
मूर्खते जीती रहो रक्षक तुम्हारे हैं धनी।।

दरवेश दयानन्द ने वहीं अर्थशास्त्र का सूत्र दिया जिसको अपनाने से प्रजा सुखी होती है। वे लिखते हैं-

इसके (कृषक) सुखी होने से ही समस्त प्रजा सुखी होगी। ऋषि का कथन सर्वांश सत्य। संसार में यातायात, विद्युत, औषधि, शिल्प, आयुध आदि सारे उद्योग बन्द हो जायें, सामान्य सी अव्यवस्था हो जायेगी। यदि अन्न उत्पादन का उद्योग बन्द हो जाये तो अकल्पनीय स्थिति उत्पन्न हो जायेगी। द्वार-द्वार पर मृत्यु दस्तक दे देगी।

इसीलिये तो कृष्ण के माध्यम से व्यास कहते हैं-

अन्नाद्भवन्ति भूतानि, पर्जन्यादन्न संभवः।
यज्ञात् भवति पर्जन्यः, यज्ञ कर्म समुद्भवः।।

हे पार्थ! यज्ञ से बादल बनते हैं, उनसे वर्षा हो अन्न उत्पादन होता है और इसी अन्न से प्राणी मात्र पलता है।

उतो घा ते पुरुष्या इदासन्येषां पूर्वेषामशृणोर्ऋषीणाम्।
अधाहं त्वां मघवञ्जोहवीमि त्वं न इन्द्रासि प्रमतिः पितेव।।

-ऋ० ७.२९.४

भावार्थ-हे परमेश्वर! आप पूर्व कल्पों के ऋषि महात्माओं की प्रार्थनाओं को बड़े प्रेम से सुनते आये हैं। भगवान्! वे भी तो मनुष्य ही थे। आपकी कृपा से ही तो वे ऋषि महात्मा बन गए। अब भी जिस पर आपकी कृपा हो, वह ऋषि महात्मा बन सकता है। इसलिए हम आपकी बड़े प्रेम से बारम्बार प्रार्थना उपासना और स्तुति करते हैं, आप ही पिता की नाईं दयालु हो कर हमें श्रेष्ठ मति प्रधान करें, जिससे इस लोक और परलोक में सदा सुखी हों।

आर्य मर्यादा साप्ताहिक पढ़ें और दूसरों को पढ़ाएं तथा लाभ उठाएं।

समीक्षा वेदोक्त ज्योतिष एवं वेदार्थ

ले०-शिवनारायण उपाध्याय, 73 शास्त्री नगर दादाबाड़ी, कोटा

(गतांक से आगे)

हम मनुष्य ही एक वर्ष का समय लगाकर जो भवन निर्माण करते हैं वह 500 वर्ष तक चलता है फिर ब्रह्म करोड़ वर्ष लगाकर जो सृष्टि उत्पन्न करता है वह 432 करोड़ वर्ष तक क्यों नहीं चलेगी। क्या ब्रह्म हमसे कम कुशल कारीगर है ? अन्त में आप पृष्ठ 194 पर स्वीकार करते हैं कि दोनों मान्यताओं का कोई प्रमाण नहीं है। स्वामी दयानन्द सरस्वती ही नहीं मनु की गणना के अनुसार सृष्टि की वर्तमान आयु 1960853118 वर्ष हो चुकी है। वैदिक काल गणना में सूक्ष्माति सूक्ष्म काल त्रुटि माना गया है जो एक सैकण्ड का 33750वां भाग होता है। दिन-रात को 30 मुहूर्त में बांटा गया है।

माह चन्द्रमा की दृष्टि से माना गया है। शुक्ल प्रतिपदा से लेकर अमावस्या तक के काल को 30 तिथियों में दर्शाया गया है। पन्द्रहवीं तिथि पूर्णिमा और तीसवीं तिथि अमावस्या है। बारह चन्द्रमास का एक वर्ष माना जाता है। इसे सौर वर्ष से मिलाने के लिए प्रत्येक 32 चान्द्र मास बाद एक मास और पुरूषोत्तम मास के नाम से जोड़ा जाता है। तेरहवें समुल्लास में क्षेत्र विज्ञान, चौदहवें समुल्लास में काल विज्ञान, पन्द्रहवें समुल्लास में व्यक्त काल की प्रवृत्ति तथा सात वारों पर विचार किया गया है। लेखक के अनुसार वैदिक वाङ्मय में वारों का नाम नहीं आया है जो सत्य है।

सोलहवें समुल्लास में वर्ष किस दिन से प्रारम्भ होना चाहिए ? इस विषय पर विचार कर बताया गया है कि संवत्सवर का प्रारम्भ बसन्त ऋतु में आने वाला विषुव दिन है जिस दिन सूर्य भूमध्य रेखा पर आता है। वही दिन संवत्सर का प्रथम दिन होता है। सुविधा के लिए इसे चैत्र शुक्ल की प्रतिपदा माना जाता है।

इसी विषय पर सत्रहवें समुल्लास में भी विचार किया गया है।

हमारे देश में पूर्व में उज्जैन में सूर्योदय से नया दिन प्रारम्भ होता रहा है। हमारी अकर्मण्यता से आजकल ग्रीनविच को नवीन दिन का प्रारम्भ माना जाता है। अठाहरवें समुल्लास में इसी पर विचार किया गया है। उन्नीसवें समुल्लास में मास का प्रारम्भ कब हो? इस पर विचार कर निर्णय लिया गया है कि शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से मास का प्रारम्भ होता है। बीसवें समुल्लास में छः ऋतुओं के विषय में चर्चा कर शतपथ ब्राह्मण 2.1.3.1 में बसन्तो ग्रीष्मो वर्षाः ते देवता ऋतवः। शरद्धमन्तशिशिरास्ते पितरः को मान्यता देकर बसन्त ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमन्त और शिशिर कुल छः ऋतुएं होती हैं।

21वें समुल्लास में ऋतुएं सूर्य के द्वारा बनती है यह बताया गया है।

बाईसवें समुल्लास में पुनः जगत् की अवस्था पर विचार हुआ है। 23वें और 24वें समुल्लासों में प्रलय के विषय में बताया गया है जो सब वैदिक वाङ्मय के अनुसार है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि लेखक ने ज्योतिष विषय को अपने सम्पूर्ण अंगो सहित बताने में पूर्ण सफलता प्राप्त की है। कोई भी फलित ज्योतिषी इस विवरण पर अंगुली नहीं उठा सकता है।

अगले 14 समुल्लासों में विद्वान् लेखक ने फलित ज्योतिष के विभिन्न अंगों पर गम्भीरता पूर्वक विचार कर कुछ आक्षेप किये हैं जिनका उन्हें उत्तर देना है। हम यहां संक्षेप में उन पर भी विचार करते हैं। पच्चीसवें समुल्लास में लेखक ने तर्कों और प्रमाणों की झड़ी लगाते हुए यह सिद्ध करने में सफलता प्राप्त की है कि फलित ज्योतिष मिथ्या है। विज्ञान 1000 प्रयोगों में से यदि एक प्रयोग में भी परिणाम अन्य से अलग आता है तो उसे सिद्धान्त नहीं मानता। सिद्धान्त तभी बनता है जब सभी प्रयोगों का परिणाम एक सा ही होवे परन्तु फलित में देखते हैं कि एक ही विषय पर अलग-अलग ज्योतिषी अलग-अलग परिणाम घोषित करते हैं। उदाहरणार्थ डा. वाल्टन फ्रैकलिन ने अपने जन्म का दिन वा समय लिखकर छः ज्योतिषियों को दिया और पूछा कि 'मेरा विवाह कब होगा ?' सबने भिन्न-भिन्न समय बताए। किसी ने यह नहीं बताया कि तुम तो विवाहित हो। फिर फलित को प्रसिद्ध ज्योतिषी महा महोपाध्याय सुधाकर द्विवेदी, काशी, पं. सीताराम झा, श्री पुरूषोत्तम जोशी, उज्जैन आदि फलित को मिथ्या स्वीकार करते हैं।

अमेरिका के 186 प्रसिद्ध वैज्ञानिकों के अनुसार ज्योतिष की भविष्य वाणियां बकवास हैं। इन वैज्ञानिकों में से 18 नोबेल पुरस्कार प्राप्त हैं।

26वें समुल्लास में फलित ज्योतिष की उत्पत्ति बताई गई है। फलित ज्योतिष की प्रत्येक बात कल्पना पर खड़ी है। फलित ज्योतिष की पुस्तकें ज्ञान-विज्ञान से शून्य और ज्ञान-विज्ञान के विरूद्ध है।

27वें समुल्लास में मुहूर्त पर विचार हुआ है। फलित ज्योति के अनुसार अभीष्ट कार्य की सफलता अथवा सिद्धि के लिए एक निश्चित समय होता है वह मुहूर्त है। इसी मुहूर्त में किया गया कार्य सफल होता है। अन्य समय में किया हुआ कार्य सफल नहीं हो सकता है। 'इसके विरोध में है चरक संहिता में लिखा है, 'कालः पुनः परिणामः' वस्तु में परिणाम ही काल है परिणाम न हो तो काल की गणना ही संभव नहीं। काल जड़ निष्क्रिय और नित्य है। अनादि अनन्त है। सर्वत्र सर्वदा एक समान रहता है। किसी कार्य की सफलता, असफलता में निमित्त नहीं है यदि होता तो इसका भी विचार कर्म के साथ अवश्य होता। नीतिकारों ने कहा है कि शुभ कार्य को शीघ्र प्रारम्भ करना चाहिए विलम्ब नहीं होने देना चाहिए। साथ ही लेखक ने 28वें समुल्लास में वारों की व्याख्या की है। सात वारों के भिन्न-भिन्न भल बताये हैं। फलित में रविवार को स्थिर वार, सोमवार को अस्थिर वार, मंगलवार को क्रूर वार बुधवार को साधारण वार, गुरूवार को लघुवार शुक्रवार को मृदुवार, शनिवार को तीक्ष्ण वार माना गया है। यह सम्पूर्ण मान्यता वेद के विरूद्ध है। वारों का न तो वेदों से सम्बन्ध है और न आकाश से सम्बन्ध है न ग्रहों से सम्बन्ध है न वेदों में वारों का नाम ही है न वारों का शुभ-अशुभ से कोई सम्बन्ध ही है। फिर लेखक ने वारों को शुभ-अशुभ मानने वालों से 19 प्रश्न भी किये हैं।

29वें समुल्लास में तिथियों के फलों पर विचार हुआ है। फलित ज्योतिषियों ने पन्द्रह तिथियों को 5 भागों में विभक्त किया है।

इन तिथियों के विभिन्न फल कहे गए हैं जो निम्न प्रकार से है-

नन्दा नामक तिथियां (1,6,11) पूर्व दिशा में यात्रा करने के लिए, भद्रा तिथियां (2,7,12) दक्षित दिशा में यात्रा करने के लिए, जया नामक तिथियां (3,8,13) पश्चिम में यात्रा के लिए, पूर्णा तिथियां (5,10,15) उत्तर दिशा के लिए शुभ हैं। रिक्ता तिथियों (4,9,14) में यात्रा नहीं करना चाहिए।

फिर सम्मुख दिशा शूल हो तब भी यात्रा नहीं करना चाहिए।

मुहूर्त दर्पण में अमावस्या व पूर्णिमा के दिन यात्रा का निषेध भी किया गया है। यह पूर्णातिथियों में कहे गए फल के विरूद्ध है। वर्तमान वैज्ञानिक युग में इस प्रकार की अविद्या जन्य बातों को कोई भी नहीं मानेगा।

अगले समुल्लासों में करण, नक्षत्र, योग एवं पंचांग विषय, मास वर्ष युग विषय, हस्तरेखा विषय, अंक ज्योतिष, भविष्यवाणी विषय पर फलित ज्योतिषियों के विचार देकर उनका तर्क संगत खण्डन किया गया है।

मैं उन सब पर लिखकर पाठकों का समय व्यर्थ नहीं करना चाहता हूँ। अन्तिम समुल्लास में स्वामी दयानन्द की एतत् विषयक मान्यता दी गई है जो पढ़ने योग्य है।

सम्पूर्ण पुस्तक वैदिक मान्यता के समर्थन में लिखी गई है। पुस्तक पठन योग्य ही नहीं वरन् हर परिवार में रखने योग्य है। लेखक स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती वैदिक वाङ्मय के जाने-माने विद्वान् हैं। उन्होंने इस पुस्तक की रचना में वेदो, ब्राह्मण ग्रन्थों, मनु स्मृति आदि के प्रमाणों की झड़ी लगा दी है। एक के स्थान पर दसियों प्रमाण देकर वैदिक मान्यता की सिद्धि की है। पुस्तक की रचना में किया गया उनका कठोर श्रम स्तुत्य है। मैं उनके स्वस्थ्य, सुखी दीर्घ जीवन की कामना करता हूँ।

वैदिक धर्म ही मानव धर्म है।

ले.-स्वामी वेदानन्द सरस्वती-उत्तरकाशी

(गतांक से आगे)

अर्थात्-दण्ड ही प्रजा पर शासन करता है। दण्ड सबके हितों की रक्षा करता है। दण्ड सोतों में जागता है। बुद्धिमान लोगों ने दण्ड को धर्म का दूसरा रूप कहा है। जिस राज्य में दण्ड नहीं, वहां कोई मर्यादा नहीं टिक सकती। दण्ड का न्याय युक्त प्रयोग सबकी रक्षा करता है और अन्याय से वह सबका नाश कर देता है।

प्रजा पालन में समर्थ वैश्य लोगों का कर्तव्य है कि वे लोकहित में सभाभवन, देवगृह, प्याऊ, कुवें, तालाब, बाग-बगीचे, औषधालय, विद्यालय, अनाथालय आदि बनवायें। जो व्यक्ति स्वेच्छा से समाजहित में अपना धन खर्च न करें ऐसे लोगों का धन छीन कर राजा इन्हें नगर से बाहर कर दे। विदुर महाराज तो कहते हैं-

द्वावम्भसि निवेष्टव्यौ गले-बद्धवा दृढ़ां शिलाम्।

ब्राह्मणं चाप्रवक्तारं धनवन्तमदायिनम्।।

अर्थात्-जो ब्राह्मण वेदोपदेश नहीं करता और वैश्य धनी होकर दान नहीं देता, इन दोनों के गले में भारी पत्थर बांध कर जल में डुबो देना चाहिये। ये दोनों पापी हैं। किसी भी राष्ट्र के उत्कर्ष के लिये वहां शूद्रों की संख्या अल्पतम होनी चाहिये।

यद् राष्ट्रं शूद्रभूयिष्ठं नास्तिकाक्रांतमद्विजम्।

विनश्यत्याशु तत्कृत्स्नं दुर्भिक्षव्याधिपीडितम्।

अर्थात्-शूद्राधिक्य, नास्तिक और अद्विजों से युक्त राष्ट्र, अकाल और व्याधि से पीड़ित होकर शीघ्र ही सम्पूर्ण नष्ट हो जाता है। जो राष्ट्र शूद्रों को विकास का अवसर नहीं देता। वह अन्यायी और मानवता का घोर शत्रु है। शूद्र भी साक्षर, ईमानदार, सत्यवादी परिश्रमी और स्वामिभक्त होना चाहिये। स्वामी लोग भी अपने भृत्य से पुत्रवत् प्यार करें।

इस वर्ग व्यवस्था की सबसे बड़ी बात यह है कि वर्ण निर्धारण गुण कर्मानुसार हो। (चातुर्वर्ण्यं मया सृष्टं गुणकर्म विभागशः)। वर्णों का आधार जन्म को मानना अधर्म है। वह दुःखों का मूल है। गुण कर्म पर आश्रित वर्ण व्यवस्था से प्रसन्न होकर व्यास देव जी कह उठे-

ब्रह्मवक्त्रं भुजौक्षत्रं कृत्स्नं उरूदरं विशः।

पादौ यस्याश्रिता शूद्राः तस्मै वर्णात्मने नमः।।

अर्थात्-ब्राह्मण की वाग्मिता, क्षत्रिय के बाहुबल, वैश्य के धनोपार्जन और शूद्र की सेवा से मिलकर जिस समाज का निर्माण होता है, उस वर्ण व्यवस्था को हम नमन करते हैं। वर्ण व्यवस्था में वेद का प्रमाण-

ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीत् बाहुराजन्यकृतः।

उरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्यामृशूद्रो अजायत।।

अर्थात्-ब्राह्मण मुख के समान क्षत्रिय भुजा के समान वैश्य उरू तथा शूद्र पैर के समान है। चारों के मिलने से पूर्ण राष्ट्र-पुरुष का निर्माण होता है।

धर्म के चार पाद-वर्ण व्यवस्था में धर्म के चार चरण बतलाये हैं, जिनसे धर्म गति करता है। मनु जी का कथन है-

त्रिवर्णानां द्विजानां वै दोषैः आप्यायते कलिः।

कर्त्तव्याणि त्रयाणां हि शिक्षा, रक्षा च पोषणम्।।

तेषां भ्रंशात् त्रयः पादाः भग्ना धर्मस्य वै कलौ।

न सद्ज्ञानम् न सद्रक्षा, न सतां पोषणं तथा।

लभ्यते दारुणे काले कुत्रापि कलि नामके।

पादश्चतुर्थः श्रमणं, सामन्ये चेतने स्थितम्।।

अर्थात्-शिक्षा, रक्षा, पोषण और श्रय ये धर्म के चार पैर होते हैं। जब द्विज (ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य) अपने कर्तव्यों से च्युत हो जाते हैं, तो धर्म के तीन पैर टूट जाते हैं। जीवन निर्वाह के लिये व्यक्ति श्रम मात्र करता है, उसमें भी श्रम चोर पैदा हो जाते हैं तो धर्म के चारों पैर टूट जाने से धर्म आहत हो जाता है। वह नष्ट होता हुआ धर्म, मानव जाति का भी नाश कर देता है।

धर्म एवं हतो हन्ति धर्मो रक्षति रक्षितः।

तस्माद्धर्मो न हन्तव्यो मानोधर्मोहतोऽवधीत्।।

अतः यदि हम मानवता की रक्षा करना चाहते हैं, तो हमें धर्म की रक्षा करनी चाहिये।

धर्म भ्रष्ट समाज की स्थिति-

शिक्षका वंचकाः जाताः, रक्षका चैव भक्षकाः।

पोषकाः मोषकाः भूताः, सेवकाअपि घर्षकाः।।

अर्थात्-धर्म भ्रष्ट समाज में शिक्षक वंचक बन जाते हैं। रक्षक भक्षक हो जाते हैं। पोषक चोर तथा सेवक सन्तापी हो जाते हैं। समाज के पतन का कारण-

मुण्डे-मुण्डे मतिर्भिन्न भिन्नो धर्मो गृहे-गृहे।

पीड़िता हि नराः लोके यतो न एक-धर्मता।।

अर्थात्-वेद ज्ञान का लोप होने से एक धर्मता समाप्त होकर घर-घर में अलग-अलग धर्म और बुद्धिभेद पैदा हो जाते हैं और सारी प्रजा राग-द्वेष से पीड़ित होकर दुःख सागर में डूब जाती है।

आश्रम व्यवस्था-ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास ये चार आश्रम हैं। इनके कर्तव्य कर्म ये हैं-

त्रयो धर्मस्कन्धाः

यज्ञोऽध्ययनंदानमितिप्रथमस्तपएवद्वितीयोब्रह्मचर्याचार्य कुलवासीतृतीयोऽत्यन्तमात्मा नमाचार्य-कुलेऽवसादयन्

सर्वएते पुण्यलोका भवन्ति ब्रह्मसंस्थो-ऽमृतत्वमेति।। छान्दोग्य उप० २/२३//१।।

अर्थात्-ब्रह्मचारी आचार्य कुल में रहकर वेदाध्ययन करे गृहस्थ-यज्ञ, अध्ययन व दान करे, वानप्रस्थ तप करे, संन्यासी वीतराग होकर सत्य धर्म का उपदेश करे।

व्यक्तित्व निर्माण की आधारशिला ब्रह्मचर्याश्रम में रखी जाती है। इसके सुधार से सब का सुधार और बिगड़ने से सबका विनाश हो जाता है। मानव जाति का भवन इस आश्रम की स्वच्छता और स्थिरता पर अवलम्बित है। कुमारावस्था में ही अश्लील चल-चित्रों के द्वारा यदि बालकों की मानसिकता को कलुषित कर दिया जायेगा, तो मानवता का विनाश निश्चित है। कलुषित मानस में ही शैतान का जन्म होता है। जो धर्म की सब मर्यादाओं को तोड़ देता है। आर्य मर्यादा में ब्रह्मचारी, वानप्रस्थी, ब्राह्मण और शूद्र अत्यन्त सादा जीवन जीते थे। आवश्यकतायें कम थी, लोग सुखी थे। अर्थ संचय नहीं करते थे, किन्तु आजकल इस व्यवस्था के बिगड़ने से आर्थिक समस्याओं ने राष्ट्र की कमर तोड़कर रख दी। ऋण लेने की प्रवृत्ति भयानक है। ऋण से ऋण का कभी समाधान नहीं हो सकता। याज्ञवल्क्य कहते हैं:

श्री वै राष्ट्रम्। श्री वै राष्ट्रस्य भारः। श्री वै राष्ट्रस्य मध्यम। क्षेमौ वैशीतम्।। ।शतपथ।। अर्थात्-सम्पति का नाम ही राष्ट्र है। वही राष्ट्र का सम्भार है। वह राष्ट्र की रीढ़ है। उसकी रक्षा ही राष्ट्र रक्षा है। सम्पन्न नागरिक सुख की नींद सोते हैं, किन्तु धन का सदुपयोग तो वैदिक धर्म ही सिखाता है जो त्यागमय जीवन और दान का उपदेश करता है। जहां गृहस्थ आश्रम उत्तम सन्तान पैदा करने के लिये होता है। आज वहां व्यभिचार, भ्रूण हत्याएँ गर्भपात जैसे कुकृत्यों का ताण्डव नृत्य हो रहा है। उसे संयम का उपदेश कौन सुनाये? सच्चे संन्यासियों का अभाव हो रहा है। मेरे मित्रो! ध्यान से सुनो-

आपदां कथितः पन्था इन्द्रियाणां असंयमः।

तज्जय सम्पदां मार्गो येनेष्टं तेन गम्यताम्।।

वैदिक धर्म ब्रह्मचर्यकाल से ही संयम की सीख सिखाता था। आजकल संयम की बात हवा में उड़ गयी है। धर्म-अर्थ-काम और मोक्ष जीवन के उद्देश्य थे, लेकिन आज का मानव अर्थ एवं काम ही उलझ कर रह गया है। धर्म और मोक्ष को भुला दिया गया है। इसका परिणाम देख ही रहे हैं। चहुं ओर आंतक का साम्राज्य है।

वैदिक युग का बालक गुरू के समक्ष उपस्थित होकर प्रथम दिन से ही प्रतिज्ञा करता था-

अग्ने व्रतपते व्रतं चरिष्यामि तच्छकेयं तन्मे राध्यताम्।

इदमहमनृतात् सत्यमुपैमि।।

अर्थात् मैं सदा असत्य से पृथक रहकर सत्य पालन का व्रत लेता हूं। आपकी मुझ पर कृपा बनी रहे। आचार्य उसे उपदेश करता है-शिष्य-तुम सदा सत्य बोलो। धर्म पर चलो, नित्य स्वाध्याय करो। कर्तव्यकर्मों में कभी प्रमाद न करो। प्रजातन्तु की रक्षा करो। माता-पिता, अतिथि, आचार्य और विद्वानों की सेवा करो। सदा सज्जन पुरुषों का संग करो। इनके उत्तम गुणों का

(शेष पृष्ठ 7 पर)

गरीबों को साथ मिलकर हर पर्व मनायें

आर्य समाज मन्दिर (गुरुकुल विभाग) फिरोज़पुर शहर समय-समय पर गरीबों के लिये भलाई का काम करता रहता है। उसी कड़ी में बैसाखी पर्व भी गरीबों को आटा बांटकर मनाया गया। सबसे पहले बड़ी ही श्रद्धापूर्वक यज्ञ किया गया। जिसमें श्री कुलदीप मैनी यजमान बने, तथा उन्होंने इस पवित्र यज्ञ में आहूति डाली।

श्री सुरिन्द्र वोहरा मंच संचालक ने बताया कि हमें हर पर्व गरीबों के साथ मिलकर ही मनाना चाहिये। यहीं आर्य समाज मन्दिर फिरोजपुर कर रहा है। अभी पिछले दिनों पहले गरीब बच्चों को स्कूल यूनिफार्म और जुत्तें बाटें। बाद में पाठ्य सामग्री बांटी, अभी बैसाखी के शुभ अवसर पर आटा बांटकर पर्व मनाया। श्री वोहरा ने कहा हमारी दूसरी संस्थाओं से अपील है। सभी मिलजुलकर ऐसा काम करे। जिससे गरीब अपने को नीचा ना समझे।

श्री सुरिन्द्र वोहरा ने कहा कि महर्षि दयानन्द ने हमें अपनी शिक्षा में यही सिखाया तथा आर्य समाज के नियम भी यही सिखाते है। यही सिखाते है तथा यज्ञ भी यहीं सिखाता है। इनका भला करो भगवान्, सबको दो सद्बुद्धि का दान, ईश्वर से हम यहीं प्रार्थना करते है। सद्बुद्धि तभी मिलती है। यदि हम पुण्य के कार्य करे।

अन्त में श्रीमति डॉ. सुदेश गोयल, श्री वेद प्रकाश बजाज, प्रधान इन्द्रजीत भटिया, तथा डी. आर गोयल सभी ने मिलकर गरीबों को आटा बांटा। ताकि कुछ दिन यह लोग खाना खा सके। शान्ति पाठ हुआ तथा सभी को प्रसाद श्री सर्वहितेषी भटिया जी ने वितरित किया।

-श्री राजी गुलाटी (महामन्त्री)

पृष्ठ 6 का शेष-वैदिक धर्म ही...

ग्रहण और दोषों का त्याग करो। जब तुम्हें कर्तव्य कर्मों में कहीं शंका हो तो विद्वानों से परामर्श लो। बड़े-बुद्धिमानों का अनुकरण करो। यही हमारा आदेश है। यही उपदेश है और यही वेद का सार है।

परमात्मा मानव के लिये उपदेश करता है-

दृष्ट्वारूपे व्याकरोत् सत्यानृते प्रजापतिः।

अश्रद्धामनृतेऽदधाच्छ्रद्धां सत्ये प्रजापतिः।।

हे मनुष्यों! सत्यासत्य के रूप को दूध और पानी की तरह अलग-अलग देखकर सत्य में श्रद्धा करो और असत्य में अश्रद्धा। पुनः वेद आदेश करता है-

यत्र ब्रह्म च क्षत्रञ्च सम्यञ्चौ चरतः सह। तं लोकं पुण्यं प्रज्ञेषं यत्र देवाः सहाग्निना।। अर्थात् तुम ऐसे पुण्य लोक का निर्माण करो। जहां के सभी विद्वान् लोग सत्यव्रत रूपी अग्नि से संयुक्त हों और जहां की ब्राह्म तथा क्षात्र शक्ति कदम से कदम मिलाकर आगे बढ़े। ब्राह्म और क्षात्र शक्ति एक दूसरे की पूरक है। जिस राष्ट्र का बुद्धि बल और बाहु बल मिलकर चले तथा सभी नागरिक राष्ट्र भक्ति से युक्त होकर सत्य धर्म का पालन करें, उसका उत्थान सुनिश्चित है।

अन्त में संसार के आर्य पुरुषों को मैं आहवान करता हूँ-

ऊर्ध्वबाहुर्विरौम्येष धर्म सर्वस्वं श्रूयताम्।

धर्मादर्थश्च कामश्च तस्मा-द्धर्मं समाचरेत्।।

मैं अपनी भुजा उठाकर उद्घोष करता हूँ कि धर्म से ही अर्थ मिलता है। धर्मानुसार आचरण करने से लौकिक और पारलौकिक सभी मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं। इसलिए धर्म का पालन करो। आर्य पुरुषों का यह विशेष कर्त्तव्य है कि वे धर्मानुसार जीवन जीते हुए वैदिक धर्म का प्रचार व प्रसार करें। यह वैदिक धर्म ही मानव धर्म है। इसी पर चलकर इन्सान, इन्सान बनता है।

आर्य मर्यादा साप्ताहिक में विज्ञापन देकर लाभ उठाएं।

श्रीमती इन्दिरा शर्मा जी नहीं रही

स्त्री आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार (दाल बाजार) की प्रधाना श्रीमती इन्दिरा शर्मा जी का 26 अप्रैल को देहान्त हो गया। श्रीमती इन्दिरा शर्मा जी 25 वर्ष तक स्त्री आर्य समाज दाल बाजार लुधियाना की प्रधाना रही। श्रीमती इन्दिरा शर्मा जी हमेशा स्त्री आर्य समाज को प्रगति के पथ पर ले जाने को अग्रसर रही। उनके अन्दर महर्षि दयानन्द के सिद्धान्तों के प्रति अटूट श्रद्धा थी क्योंकि वे स्वयं कन्या गुरूकुल देहरादून से शिक्षित थी। श्रीमती इन्दिरा शर्मा जी का अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। शहर के सभी गणमान्य व्यक्तियों ने उनके संस्कार में भाग लिया। उनकी आत्मिक शान्ति के लिए रस्म उठाला 28 अप्रैल 2018 को दुर्गा माता मन्दिर भाई रणधीर सिंह नगर लुधियाना में 1 से 2 बजे तक हुआ।

-माता जनक रानी मन्त्राणी स्त्री आर्य समाज दाल बाजार

आर्य समाज वेद मन्दिर आर्य नगर जालन्धर का 40 वां वार्षिक उत्सव

आर्य समाज वेद मन्दिर आर्य नगर जालन्धर का वार्षिक उत्सव दिनांक 10 मई 2018 से 13 मई 2018 तक बड़े उत्साह एवं हर्षोल्लास के साथ मनाया जा रहा है। इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महोपदेशक पं. विजय कुमार शास्त्री जी के प्रवचन तथा भजनोपदेशक श्री जगत वर्मा जी के मधुर भजन होंगे। कार्यक्रम 10, 11, 12 मई को रात्रिकालीन रहेगा जिसमें 7:00 से 10:00 बजे तक यज्ञ, भजन व प्रवचन होंगे। 13 मई रविवार को विशेष कार्यक्रम का शुभारम्भ विश्व शान्ति महायज्ञ के साथ किया जाएगा जिसके ब्रह्मा पं. विजय शास्त्री जी तथा मुख्य यजमान श्री निर्मल आर्य जी होंगे। 9:45 बजे ध्वजारोहण श्री तरसेम लाल, मैनेजर युको बैंक के द्वारा किया जाएगा। अल्पाहार के पश्चात 11:00 से 2:00 बजे तक श्री सरदारी लाल आर्य वरिष्ठ उपप्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की अध्यक्षता में आर्य महासम्मेलन होगा जिसमें बहुत से गणमान्य अतिथि भाग लेंगे। आप सभी अपने परिवार एवं ईष्टमित्रों सहित इस कार्यक्रम में भाग लेकर अपने जीवन को लाभान्वित करें। **-वेद आर्य महामन्त्री आर्य समाज आर्य नगर**

आर्य समाज स्थापना दिवस

आर्य समाज इन्दिरा कालोनी मजीठा रोड़ अमृतसर की ओर से दिनांक 24-4-18 को आर्य समाज स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में भव्य समारोह करवाया गया। जिस की अध्यक्षता श्री वेद प्रकाश प्रधान आर्य समाज इन्दिरा कालोनी जी ने की। सर्व प्रथम हवन यज्ञ हुआ। तत्पश्चात प्रधान जी ने स्वामी दयानन्द जी के जीवन पर एवं उनके द्वारा सामाजिक कुरीतियों को दूर करने के लिये कार्य किये गये। कार्यों प्रति व्याख्यान किया गया। पंडित सिकन्दर जी पुरोहित आर्य समाज श्रद्धानन्द अमृतसर ने मधुर भजन प्रस्तुत किये। अंत में प्रधान जी ने सभी उपस्थित हुये। महानुभावों का धन्यवाद किया। उस शुभ अवसर पर हलका उत्तरी के विधायक श्री सुनील दत्ती जी, श्री कृष्णा शर्मा (कुकू) पूर्व पार्षद, श्री राकेश शर्मा, प्रधान महांकाली मंदिर, श्री स्वतंत्र कुमार महामंत्री, श्री कुलभूशण कुमार कोषाध्यक्ष, श्री जगदीश राज, श्री चिमन लाल, श्री राम नारायण, श्री जतिंदर कुमार, भुपिद्र कुमार, श्रीमति आशा रानी, चमेली देवी, सुमित्रा देवी जी एवं बहुत से गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

-स्वतंत्र कुमार महामन्त्री

घिलौड़ी गेट पटियाला का चुनाव

आर्य समाज घिलौड़ी गेट पटियाला का चुनाव गत दिनो सम्पन्न हुआ जिसमें निम्न कार्यकारिणी का गठन किया गया-: श्री वीरेन्द्र कुमार कौशिक-प्रधान, श्री संजीव शर्मा-उपप्रधान, श्री नरेन्द्र शर्मा-उपप्रधान, श्री परमिन्द्र सिंह-मन्त्री, श्री अश्विनी मेहता-कोषाध्यक्ष, श्री शिवदास-उपमन्त्री, श्री चन्द्र मोहन कौशल, प्रचारमन्त्री, श्री संजीव कुमार-अधिष्ठाता आर्य वीर दल, श्री दर्शन कुमार, श्री देवेन्द्र नाथ, श्री गुरदीप सिंह, श्री सुशील शर्मा सदस्य तथा श्री प्रदीप कुमार विशेष आमन्त्रित सदस्य नियुक्त किए गए।

वीरेन्द्र कौशिक प्रधान आर्य समाज

वेदवाणी
उस इन्द्र को देखो

यस्मान्न ऋते विजयन्ते जनासो यं युध्यमाना अवसे हवन्ते।
यो विश्वस्य प्रतिमानं बभूव यो अच्युतच्युत् स जनास इन्द्रः।।
-ऋ० २।१२।९; अथर्व० २०।३४।९

ऋषिः-गृत्समदः।। देवता-इन्द्रः।। छन्दः-भुरिक्त्रिष्टुप्।।

विनय-लोग 'ईश्वर', 'ईश्वर' नाम लिया करते हैं, परन्तु हे मनुष्यो! क्या तुम उसे अनुभव करते हो ? बेशक, वह इन्द्रियों से परे होने के कारण आँख आदि से ग्रहण नहीं किया जा सकता, तो भी प्रत्येक मनुष्य उसे अनुभव कर सकता है। इस संसार में मनुष्य को जो कुछ विजय मिलती है। वह सब उसी से मिलती है। उसकी अनुकूलता के बिना बड़े-से-बड़े बली, अभिमानी को विजय नहीं मिल सकती। सब विजय उसी की है, अतः जहाँ प्रत्येक विजय में हम उसकी महत्ता का अनुभव करें, वहाँ अपनी प्रत्येक हार में भी उसकी महत्ता को देखें, जिसकी स्वीकृति न होने के कारण ही हमें प्रत्येक हार मिलती है। इस युद्धमय संसार में मनुष्य जब अपनी सब प्रकार की शक्ति से निराश हो जाता है और हारता हुआ अपने को बिल्कुल बेबस जानकर जिस एक अज्ञात और अपने से ऊँची शक्ति को पुकारने लगता है, वही शक्ति परमेश्वर है। नास्तिक पुरुष के हृदय में भी उस चरम निःसहायता की अवस्था में किसी अन्य शक्ति से सहायता पाने की छिपी हुई आशा प्रकट हो जाती है। उस शक्ति को क्यों नहीं देखते? अपनी इस चरम निःसहाय दशा में हारकर, बेबस होकर उस ईश्वरीय शक्ति को अनुभव करो। जिसके बिना संसार में कोई भी विजय नहीं मिलती। देखो, यह वह है जिसे रक्षा पाने के लिए सब मनुष्य युद्धों में पुकार रहे हैं और यदि चाहो तो संसार की एक-एक वस्तु में उसे अनुभव करो। यह सब विश्व उसी को दिखा रहा है। यह संसार और किसमें रखा हुआ है ? इस विश्व को किसने धारा हुआ है ? यही वह है जो इस सब संसार का आधार, सार और आत्मा है और ऐसा होकर भी जो संसार की प्रत्येक वस्तु में ऐसा तद्रुप (ऐसा तत्प्रतिम) हो बैठा है कि मनुष्य संसार की वस्तुओं को देखते हैं पर उसे नहीं देखते, परन्तु यह न दीखने वाला ही सब कुछ है। इस संसार में जो असम्भव सम्भव हो रहे हैं, जिनके कभी मिटने की सम्भावना नहीं होती वे क्षण-भर में मिट जाते हैं। ये सब काम वही न दीखने वाला कर रहा है। जिन्हें यह दुनिया अडिग समझती है, वह उन्हें भी चुपके से गिरा देता है। उस 'अच्युतच्युत्' को देखो! संसार की एक-एक वस्तु में रमे हुए उसे देखो! वह विश्वमय होकर हमारे सामने खड़ा है; उसे क्यों नहीं देखते? हे मनुष्यो! उसे देखो, वही इन्द्र है, वही परमेश्वर है।

इन्द्र श्रेष्ठानि द्रविणानि धेहि चित्तिं दक्षस्य सुभगत्वमस्मे।
पोषं रयीणामरिष्टिं तनूनां स्वाद्मानं वाचः सुदिनत्वमह्नाम्।।
-ऋ० २.२१.६

भावार्थ-हे दयामय जगत्पिता परमात्मन्! हमको कृपा करके श्रेष्ठ धन दो। जिस ज्ञान से हमें सब प्रकार का बल प्राप्त हो के, वैसा ज्ञान हमको दो। सब प्रकार का उत्तम से उत्तम ऐश्वर्य प्रदान करो। भगवन्! आपके पुत्र हम लोगों को धनों की वृद्धि, शरीर की आरोग्यता, वाणी की मधुरता, दिनों का सुख से बीतना दो। यह सब पदार्थ प्रसन्न होकर, आप अपने प्रेमी भक्तों को प्रदान करते हैं। इसलिए अपने प्रेम और भक्ति का भी हमें दान दो।

अहमिन्द्रो न परा जिग्य इद्धनं न मृत्यवेऽवतस्थे कदाचन।
सोममिन्मा सुन्वन्तो याचता वसु न मे पूरवः सख्ये रिषाथन।।
-ऋ० १०.४८.५

भावार्थ-परम दयालु जगदीश पिता हमको उपदेश करते हैं। हे मेरे प्यारे पुत्र मनुष्यो! मैं सब धन का स्वामी हूँ, मेरे धन को कोई छीन नहीं सकता और मैं अमर हूँ, मृत्यु मुझे नहीं मार सकता। आप लोग मेरी प्रसन्नता के लिए, यज्ञादि वेदविहित उत्तम कर्मों को करते हुए, धन की प्रार्थना करो, मैं आपकी कामना को पूर्ण करूँगा। आप यह बात निश्चित जान लो, कि जो मेरा भक्त मेरी प्रसन्नता के लिए, यज्ञ, तप, दान वेदादि सच्छास्त्रों का स्वाध्यायादि करता हुआ, मेरे साथ मित्रता करता है, उसका कभी नाश नहीं होता, किन्तु वह उत्तम गति को ही प्राप्त होता है।

शोक समाचार

आर्य समाज जालन्धर छावनी के मन्त्री श्री जवाहर लाल जी महाजन का गत दिनों देहान्त हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। श्री जवाहर लाल महाजन जी पिछले कई वर्षों से आर्य समाज जालन्धर छावनी के मन्त्री थे। उन्होंने आर्य समाज की उन्नति के लिए हमेशा सहयोग दिया। आर्य परिवार में जन्म होने के कारण आर्य विचारधारा उनके अन्दर कूट-कूट कर भरी हुई थी। श्री जवाहर लाल महाजन जी परोपकारी वृत्ति के इन्सान थे। समाज सेवा के कार्यों में हमेशा बढ़-चढ़ कर भाग लेते थे। के.एल. आर्य स्कूल को आगे बढ़ाने में भी उनका प्रमुख योगदान है। ऐसी परोपकारी एवं पुण्य आत्मा के इस संसार से जाने पर आर्य समाज की अत्यधिक क्षति हुई है। परमपिता परमात्मा दिवंगत आत्मा को अपने चरणों में स्थान दें एवं उनके द्वारा किए गए कर्मों के अनुसार उन्हें शान्ति एवं सद्गति प्रदान करे। दुःख की इस घड़ी में हम सभी शोक सतंप्त परिवार के साथ है। श्री जवाहर लाल महाजन जी की आत्मिक शान्ति के अन्तिम शोक सभा का आयोजन दिनांक 29 अप्रैल रविवार को दोपहर 2 से 3 बजे तक किया गया। इस अवसर पर नगर के सभी गणमान्य लोगों ने श्री जवाहर लाल महाजन जी को अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए।

-चन्द्र गुप्ता प्रधान आर्य समाज जालन्धर छावनी

62 आर्यों का जत्था माउंट आबू के लिये रवाना

आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार (दाल बाजार) लुधियाना तत्वावधान में श्री सुरेन्द्र कुमार टंडन मंत्री आर्य समाज दाल बाजार के नेतृत्व में 62 आर्य जनों का विशाल जत्था आर्ष महाविद्यालय गुरुकुल सिरोही माउंट आबू के वार्षिक उत्सव में सम्मिलित होने के लिये जा रहा है। यह जत्था 24 मई 2018 को सायंकाल चलेगा तथा 25 मई 2018 को प्रातःकाल ऋषि उद्यान अजमेर में पहुंचेगा वहां पर ऋषि के कर्म स्थलों के दर्शन करने के पश्चात 25 मई रात्रि आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय के लिये प्रस्थान करेंगे। गुरुकुल महाविद्यालय में पहुंच करके गुरूकुल में आये हुये विद्वानों के विचारों को सुनेंगे और धर्म लाभ उठाएंगे।

-अरविन्द कुमार शास्त्री पुरोहित

परीक्षा परिणाम शत प्रतिशत रहा

आर्य सीनियर सैकेंडरी स्कूल लुधियाना का बारहवीं कक्षा का नतीजा घोषित किया गया जिसमें आर्य सी.सै.स्कूल के विद्यार्थियों का नतीजा कुछ इस तरह रहा हैं। साईंस 92 प्रतिशत, कामर्स 97 प्रतिशत और आर्ट्स 95 प्रतिशत। नतीजा अच्छा आने पर स्कूल की प्रबन्ध समिति के मैनेजर श्रीमती विनोद गांधी जी ने स्कूल की मुख्याध्यापिका श्रीमती रेखा कौल एवं सभी अध्यापकों को बधाई दी। उन्होंने कहा कि यह सारे अध्यापकों की मेहनत का नतीजा है और इसलिये स्कूल का नतीजा अच्छा आया है। उन्होंने उम्मीद जताई कि सभी अध्यापक गण इसी तरह मेहनत करते रहेंगे। नतीजा देखकर सभी अध्यापकों में खुशी का माहौल बना हुआ है।

-प्रिंसीपल आर्य सी. सै. स्कूल लुधियाना

बारहवीं का परीक्षा परिणाम शत प्रतिशत रहा

दयानन्द पब्लिक स्कूल दीपक सिनेमा रोड लुधियाना का बारहवीं का परिणाम शत प्रतिशत घोषित हुआ। स्कूल के सभी विद्यार्थियों ने हर विषय में 80 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त किये। स्कूल की प्रिंसीपल महोदय ने इसका श्रेय बच्चों की लग्न, अभिभावकों के सहयोग और शिक्षकों की मेहनत को बताया। उन्होंने बताया कि स्कूल का मुख्य उद्देश्य पढाई के साथ साथ बच्चों में नैतिक संस्कार पैदा करना है और महर्षि दयानन्द जी के बताये हुये मार्ग पर चलना है। उन्होंने बताया कि स्कूल में पलक ने क्रमशः प्रथम, प्रियंका ने द्वितीय और संगीता ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। उन्होंने प्रबन्ध समिति का भी पूरा पूरा सहयोग देने पर धन्यवाद किया।

-प्रिंसीपल दयानन्द पब्लिक स्कूल लुधियाना

श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा गायत्री प्रिंटिंग प्रैस, मण्डी रोड जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। E-mail: apspunjab2010@gmail.com, www.aryapratinidhisabha.org
आर्य मर्यादा में प्रकाशित सारी लेखन सामग्री से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्याय क्षेत्र जालन्धर होगा।